SHODHSAMHITA
शोधसंहिता

ISSN 2277-7067
UGC CARE Group 1

भारत में मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व

भावना साहू

शोध छात्र (एम. फिल.), डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़),

डॉ.संगीता सिंह

प्रोफेसर, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़),

पायल चक्रवर्ती

सहायक पुस्तकालाध्यक्ष, डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय करगी रोड, कोटा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)।

सारांश:-

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में मानसिक तथा बौद्धिक विकास के लिए ज्ञान प्राप्त करता है, जिसके लिए शिक्षा आवश्यक तथा एक मात्र माध्यम है। भारत में ऐसा वर्ग भी निवास करता है जिन्हें जीवन-यापन करने के लिए अपनी शिक्षा से दूर होना अर्थात छोड़ना पड़ा। पहाड़ी क्षेत्रों, ग्रामीण क्षेत्रों तथा निम्न आय वर्ग के लोगों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे वर्ग के लोग मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अध्ययन कर अपनी शिक्षा को पूर्ण कर ज्ञान हासिल कर सकते है। यह शिक्षा प्रणाली उन सभी के लिए लाभदायक है जो जीवनपर्यन्त कुछ नया सीखना चाहते है।

इसके साथ ही यह अत्यंत आवश्यक है कि विद्यार्थी जिस विश्वविद्यालय/संस्थान अथवा केन्द्र में प्रवेश लेना चाहते हैं उससे संबंधित सभी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर तथा उचित जांच-पड़ताल करके ही प्रवेश लेवें। यह छात्रों के भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलु होते है उसी प्रकार मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लाभ तथा हानियां दोनों है। छात्रों के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि वे जिस भी प्रणाली से अपनी शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उसकी गुणवत्ता श्रेष्ठ हो। सभी आवश्यक जानकारियों, विशेषताओं, लाभ तथा हानियों की उचित जांच कर ही प्रवेश लेवें।

आधारभूत शब्द - दूरस्थ शिक्षा, मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली, भारत में दूरस्थ शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा का महत्व, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली, **Distance Education, Distance Learning, Open & Distance Education.**

1. प्रस्तावना:-

किसी भी देश अथवा राष्ट्र के निर्माण के बाद उसके विकास में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है । जैसा कि हम सभी जानते है कि आज के इस आधुनिक युग में तकनीक तथा प्रौद्योगिकी का अपना विशेंष महत्व है । समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को अपनाकर इसे सिद्ध भी किया जाता रहा है । वर्तमान में प्रदान की जाने वाली शिक्षा तथा पिछले दस-बीस वर्ष पूर्व प्रदान की जाने वाली शिक्षा में अत्यधिक भिन्नता है ।

इस समय तकनीक तथा प्रौद्योगिकी को अपनाकर उसमें महत्वपूर्ण परिवर्तन कर कार्य की प्रणाली, क्रियाओं, विधियों, व्यवस्थाओं तथा प्रक्रियाओं को सुगम बनाने का प्रयास किया जाता है जिससे कि कार्यकुशलता में वृद्धि के साथ ही समय की बचत भी की जा सके ।

2. शिक्षा:-

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास तथा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण पर जोर दिया जाता है । शिक्षा किसी भी विद्यार्थी के जीवन की आधारशिला होती है जहाँ उनका मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, शारीरिक विकास के साथ ही भावनात्मक विकास भी होता है । इसके लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि देश में जिस माध्यम अथवा प्रणाली से ज्ञान का प्रचार व प्रसार किया जा रहा है-

- वह उच्च स्तर का हो,
- उसकी गुणवत्ता श्रेष्ठ हो,
- विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुसार हो,
- विद्यार्थियों के सोच व समझ के अनुसार हो,
- चित्र तथा दृश्य माध्यमों का उपयोग,
- खेल माध्यमों का उपयोग,
- व्यवसायिक भाषा के साथ ही क्षेत्रीय/स्थानीय भाषा का प्रयोग,
- सही समय पर उचित पाठ्य सामग्री विद्यार्थियों को उपलब्ध हो,
- नवीनता तथा नवाचार का उपयोग हो।

इससे विद्यार्थी शिक्षा के साथ ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में निरंतर सही राह की ओर अग्रेषित होंगे । शिक्षा के क्षेत्र में मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ज्ञान का प्रसार करने वाली संस्थानों का भी विशेष सहयोग रहा है ।

- ऐसे छात्र जो किसी परिस्थिति वश अथवा निजी कारणों से शिक्षा से दूर हो चुके है,
- कुछ छात्र ऐसे भी होते हैं, जो जीवनपर्यंत कुछ न कुछ ज्ञान हासिल करना चाहते है, ऐसे विद्यार्थियों के लिए मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एक वरदान है ।

3. मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली:-

कुछ विद्वानों ने मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार से परिभाषित किया है जो निम्ननिखित है:-

अ. नायडू (1994) ने बताया कि:-

'मीडिया व शिक्षण सामग्री दूरस्थ शिक्षा के महत्वपूर्ण भाग है । मीडिया व शिक्षण सामग्री के अंतर्गत मुद्रित पाठ्य सामग्री, ओडियो कैसेट, विडियों तथा डिजिटल सामग्री को रखा जा सकता है । दूरस्थ शिक्षा में टेलीक्रान्फ्रेसिंग तथा ऑनलाइन शिक्षण की आवश्यकता है ।'

ब. मालकोन एडिसेशिया:-

इनके अनुसार दूरस्थ शिक्षा से अभिप्राय 'सीखने और सीखाने की वह प्रक्रिया जिसमें स्थान और समय के आयाम सीखने और सीखाने के मध्य दखलदांजी करते हैं ।'

स. मैकंजी के अनुसार:-

'मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा की संरचना में पार्टटाईम अध्ययन करने वालो को भी दूर रहकर पढ़ने के अवसर दिए जाते है।'

द. यूनेस्को के अनुसार:-

'जीवन पर्यन्त शिक्षा एक प्रक्रिया है । व्यक्ति औपचारिक, निरौपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा से सीखता है ।'

अतः हम मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से यह अर्थ भी निकाल सकते है कि 'मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें वे सभी प्रकार के छात्र शामिल है जो किसी कारण वश अपनी शिक्षा को पूरी नहीं कर पाये अथवा आकस्मिक परिस्थितियों वश शिक्षा से दूर हो गए वावजूद वे अपनी शिक्षा को पूरी करना चाहते है, उच्च अध्ययन से जुडना

चाहते है जिससे कि उच्च शिक्षा ग्रहण कर वे अपने ज्ञान तथा जीवन स्तर में वृद्वि कर सके, को शिक्षा प्रदान करती है । ऐसी प्रणाली में शिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों का आमने सामने मौजूद होना आवश्यक नहीं है ।'

4. भारत देश:-

जैसा कि हम सभी जानते है कि भारत एक विकासशील देश है । इसके साथ ही यह सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश भी है । अपने भारत देश में कई प्रकार की भाषाएं बोली जाती है । इस अनुपम ,अनोखे एवं गौरवपूर्ण देश भारत के राज्य, अपने आप में ही विशिष्ट पहचान लिए हुए है ।

हर राज्य की अपनी एक विशेषता , संस्कृति, सामाजिक पहचान , कलात्मकता ,बोली अथवा भाषा है । इसीलिए कहा भी जाता है – 'अपना भारत देश विविधता में एकता लिए हुए है ।'

5. जीवनयापन तथा कृषि कार्य:-

देश में निवास करने वाले लोगों के जीवनयापन करने का तरीका भी भिन्न भिन्न है । आज भी जीवनयापन के लिए भारत की जनसंख्या का एक बड़ा क्षेत्र वर्ग कृषि कार्य से जुड़ा हुआ है जिसके माध्यम से ही वह अपना तथा परिवार का पालनपोषण करता है ।

6. जीवनशैली:-

भारत देश में ऐसा वर्ग भी निवास करता है जो गाँवों , खेत-खलिहानों, वनों से आच्छादित प्रदेशों तथा पहाडी क्षेत्रों में रहकर अपना जीवन यापन करता है । भारत के अलग-अलग प्रातों में जीवन यापन करने वाले लोगों की जीवनशैली में भी भिन्नता पाई जाती है । ऐसे वर्ग को शिक्षा प्राप्त करने में कई प्रकार की समस्याओं से रूबरू होना पड़ता है । मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ऐसे विशेष वर्ग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण तथा लाभप्रद है ।

7. गाँव,वन क्षेत्र तथा पहाड़ी क्षेत्रः-

देश का एक ऐसा वर्ग जो इन क्षेत्रों में निवासरत है, शिक्षा प्राप्त करने के लिए कई प्रकार की परेशानियों से जुझता है, जैसेः-

- ऐसे क्षेत्रों में शिक्षा के साधन तथा माध्यम सीमित होते है,
- ऐसे क्षेत्रों मे नवाचार का अभाव होता है,
- ऐसे क्षेत्रों में शैक्षिक सुविधाऐं, सेवाऐं तथा सामग्री सीमित होते है अथवा कम,

- ऐसे क्षेत्रों में इंटरनेट की सुविधा सही तरीके से मिल नहीं पाती,
- ऐसे क्षेत्रों में इंटरनेट की अत्यंत धीमी गति जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है,
- अचानक ही किसी भी प्रकार के प्राकृतिक आपदाओं का हो जाना।

ऐसे क्षेत्रों में जीवनयापन करने वाले किसान तथा निम्न आय वर्ग के व्यक्ति सर्वप्रथम जीवन की मूलभूत सुविधाओं को पूरा करने में ही अपना जीवन लगा देते है । मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ऐसे छात्रों के लिए वरदान है जिसमें छात्र अपने स्थान पर रहकर ही अपनी शिक्षा को पूर्ण कर ज्ञान प्राप्त कर सकते है । स्वयं शिक्षा प्राप्त कर वे अपने समाज अथवा क्षेत्र के लोगो को भी इसका लाभ प्रदान कर सकते है ।

8. छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष संदर्भ में:-

आज हम ईक्कसवीं सदी में जीवनयापन कर रहे है । भारत देश तकनीक तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बहुत आगे बढ चुका है और इसे सिद्ध भी कर चुका है । इसके बावजूद आज भी छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा तथा बस्तर संभाग में ऐसे कई गांव अथवा क्षेत्र है जहाँ के लोगो को अपने जीवनयापन के लिए मूलभूत सुविधाओं के साथ ही शिक्षा के लिए भी कई प्रकार की परेशानियों से रूबरू होना पड़ता है। यहाँ आज भी बिजली, पानी जैसी जीवन की आधारमूल सुविधाएँ लोगो को उपलब्ध नहीं हो पाती । नक्सलवाद तथा माओवाद जैसी गंभीर समस्याएं इन क्षेत्रों में अपना पैर पसारे हुए है। ऐसे स्थानों पर इन्टरनेट की सुविधा का उपलब्ध हो पाना एक अतिश्योक्ति ही होगी।

9. शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र:-

मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी निम्न प्रकार के हो सकते है -

- जीविकायापन के लिए शिक्षा छोड़ चुके छात्र ,
- गृहणियाँ,
- विकलांग व्यक्ति ,
- मजदूर,
- किसान ,
- कम शिक्षा प्राप्त ,
- नौकरी पेशा,
- जीवनपर्यंत शिक्षा से जुड़े रहने वाले छात्र,

- उच्च अध्ययन में रूचि रखने वाले छात्र,
- अनेक विषयों में डिग्री प्राप्त करने की रूचि रखने वाले छात्र,
- अपने स्थान पर रहकर ही शिक्षा प्राप्त करने वाले,
- एक साथ दो डिग्रीयाँ प्राप्त करने में रूचि रखने वाले जिसमें एक परम्परागत रूप से, दूसरा दूरस्थ माध्यम से,
- छोटे कार्यों में लगे हुए पर शिक्षा में रूचि रखने वाले,
- किसी भी परिस्थिति अथवा निजी कारणों से शिक्षा से दूर हो चुके छात्र,
- अपने व्यवसाय तथा शिक्षा में अधिक कुशलता प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले छात्र,
- अपने विशिष्ट विषय से संबंधित नवीन तथ्यों, सूचनाओं, तकनीकांे, अविष्कारों तथा विकास को जानने की इच्छा रखने वाले छात्र ।

10. **मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से लाभः**-

- ❖ पढ़ने/अध्ययन करने की स्वतंत्रता,
- ❖ विशेष स्थान,
- ❖ सीखने की आजादी,
- ❖ सभी वर्ग के लिए,
- ❖ आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग,
- ❖ कार्य/काम के साथ साथ पढ़ाई,
- ❖ स्थान की स्वतंत्रता,
- ❖ समय का उपयोग।

1. पढ़ने की स्वतंत्रताः-

मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करने वाले छात्र किसी भी स्थान पर रहकर अपनी इच्छानुसार अपने पाठ्यक्रम का अध्ययन कर सकते है । पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के लिए छात्र समय, स्थिति तथा वांछित स्थान के अनुसार कहने को तात्पर्य यह है कि अपनी सुविधानुसार इच्छित पाठ्यसामग्री का अध्ययन कर सकते है ।

2. विशेष स्थान:-

मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करने वाले छात्रों को परम्परागत प्रणाली अथवा सामान्य अध्ययन करने वाले छात्रों की भांति विश्वविद्यालय, संस्थान अथवा अध्ययन केन्द्र जाने की आवश्यकता नहीं होती । छात्र किसी भी स्थान में रहकर अपना अध्ययन कार्य कर सकते है ।

3. सीखने की आजादी:-

भारत में ऐसे बहुत से लोग है जो अपने कार्य के साथ ही अध्ययन में भी रूचि रखते है। कुछ ऐसे लोग भी है, जिन्हे किन्ही मजबूरी के कारण अपनी शिक्षा को छोड़ना पड़ा । इन सभी वर्गों के लिए मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एक अवसर है । इसके माध्यम से वे फिर से अपनी शिक्षा को पूर्ण कर सकते है ।

कुछ नया सीखते रहने, नवीन ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले लोग इस प्रणाली से शिक्षा प्राप्त कर शिक्षा स्तर के साथ ही जीवन स्तर में भी वृध्दि कर सकते है ।

4. समय की आजादी:-

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करने वाले छात्रों को अध्ययन करने के लिए समय की स्वतंत्रता होती है अर्थात् छात्र को दिन के समय में किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर वह दोपहर, शाम अथवा रात का समय अपने अध्ययन के लिए निर्धारित कर सकते है । इसके लिए छात्र पूर्ण रूप से स्वतंत्र होते है । छात्र अपनी क्षमता तथा स्थिति के अनुसार किसी भी समय का निर्धारण कर सकते है ।

5. सभी वर्ग के लिए:-

मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से उस वर्ग के लोग जो कुछ नया सीखने की चाहत रखते है, अपनी शिक्षा को पूरी करना चाहते है, इस प्रणाली से शिक्षा प्राप्त कर लाभ ले सकते है । दूरस्थ शिक्षा प्रणाली सभी वर्ग को समान शिक्षा प्रदान करती है । शारीरिक रूप से असमर्थ, अपाहिज अथवा दिव्यांग वर्ग के लोग इससे लाभ प्राप्त कर सकते है। मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली सभी वर्ग को समान शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है ।

6. आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग:-

आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग जो कई प्रकार की परेशानियों का सामना कर सिर्फ अपनी मूलभूत जरूरतों को पूरा कर पाते है वे भी मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अपनी शिक्षा को पूर्ण कर सकते है क्योंकि इस प्रणाली से शिक्षा

प्राप्त करने पर आने वाली लागत परम्परागत प्रणाली से अध्ययन करने पर आने वाली लागत की अपेक्षा कम होती है। छात्र अपनी सुविधानुसार अपने स्थान/क्षेत्र में रहकर ही अपनी शिक्षा को पूर्ण कर सकते है।

7. कार्य /काम के साथ साथ पढ़ाई:-

भारत में अधिकतर लोग अपने जीवनयापन के लिए किसी ना किसी प्रकार का कार्य करते है जिसमें से कुछ लोग कार्य के साथ ही अपनी शिक्षा को पूर्ण करना चाहते है अथवा शिक्षा से जुडे रहकर कुछ न कुछ नया सीखना चाहते है, ऐसे लोगों के लिए मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रणाली के माध्यम से कार्य के साथ ही वह अध्ययन भी जारी रख सकता है। उन्हे अपने कार्य को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

8. स्थान की स्वतंत्रता:-

मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करने वाले छात्र किसी पाठयक्रम में प्रवेश करने के बाद किसी दूसरे अथवा अन्य स्थान से अपनी शिक्षा को पूर्ण कर सकते है। छात्र अपनी इच्छानुसार अपने निवास स्थान, कार्यस्थल, घर से बाहर जब भी समय मिले, किसी भी स्थान पर रहकर अध्ययन कर सकते है।

9. समय का उपयोग:-

दूरदराज, पहाड़ी क्षेत्रों, गांवो में निवास करने वाले, मजदूर, किसान, गृहणियाँ, जिनकी आय कम हो, अपने क्षेत्र से बाहर नहीं जा पाने वाले लोग जो शिक्षा से जुड़े रहना चाहते है, कुछ नही चीजे सीखना चाहते है ऐसे वर्ग के लोग मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अध्ययन कर लाभ प्राप्त कर सकते है। ऐसा वर्ग अपने सारे कार्यो को करने के पश्चात् इस प्रणाली से अध्ययन कर कुछ नया सीखते अथवा ज्ञान में वृद्धि करते हुए अपने समय का उपयोग कर जीवन स्तर में सुधार ला सकते है।

10. हानियाँ:-

हर सिक्के के दो पहलु होते है उसी प्रकार मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के कुछ लाभ भी है और कुछ हानिया भी। इस शिक्षा प्रणाली से होने वाली हानियाँ निम्नलिखित है -

- ❖ समाधान,
- ❖ विलम्ब,
- ❖ तकनीकी प्रभाव,

- ❖ विश्वनीयता,
- ❖ ग्रामीण तथा दुर्गम क्षेत्र,
- ❖ सीमित सम्पर्क।

1. **समाधान:-**

मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करने वाले छात्रों को संबंधित पाठयक्रम में परेशानी आने पर बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस माध्यम में शिक्षक, अध्ययन करने वाले छात्र, उनके साथ अध्ययन करने वाले सहपाठी एक दूसरे के सामने स्थित नहीं होते है जिससे वे एक दूसरे को न जान पाते है और न ही सम्पर्क में आ पाते है । इसीलिए समस्या के समाधान के लिए लम्बे समय तक इंतजार करना पड़ता है।

2. **विलम्ब:-**

मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करने वाले छात्र अपनी सुविधानुसार अथवा इच्छानुसार पाठ्यक्रम का अध्ययन करते है जिससे छात्र को स्वयं जागरूक होकर अध्ययन करना पड़ता है। छात्र को स्वप्रेरित, स्वयं अनुशासित होकर अपना अध्ययन कार्य पूर्ण करना होता है। छात्र द्वारा सही अनुमान न लगा पाने अथवा टालने को प्रवृत्ति से अध्ययन कार्य में विलम्ब होने की चिंता बनी रहती है। इस प्रणाली में सही समय पर निश्चित या उचित मार्गदर्शन मिलने की सम्भावना कम ही होती है।

3. **तकनीकी प्रभाव:-**

यदि कोई छात्र दुर्गम क्षेत्रों, पहाड़ी, ग्रामीण अथवा ऐसे क्षेत्र/प्रांत से है जहाँ नेटवर्क की स्थिति सही नहीं है। कई परेशानियों से रूबरू होने के बाद अल्प समय के लिए ही सही तरह से नेटवर्क का लाभ मिल पाता है ऐसे स्थिति में भी छात्रों को कई प्रकार की मुश्किलों का सामना करना पड़ता है जिसका प्रभाव छात्र के अध्ययन, ज्ञान तथा भविष्य पर पड़ता है।

निम्नलिखित कारणों से भी छात्रों को कई परेशानियाँ आती है -

- ❖ साफ्टवेयर/नई तकनीको का ज्ञान न होना,
- ❖ सही समय पर तकनीकी समस्याओं का समाधान न होना,

- ❖ तकनीक तथा इससे संबंधित ज्ञान रखने वाले लोगों का न होना जो छात्र को मूलभूत जानकारी प्रदान कर सके।

4. विश्सनीयता:-

वर्तमान समय में भारत में ऐसे बहुत से छात्र है जो अपनी शिक्षा मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से प्राप्त कर रहे है। भारत देश में पिछले कुछ समय से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है। इसके साथ ही कई नए-नए विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थानों तथा केन्द्रो की स्थापना के साथ ही वहाँ कई प्रकार के पाठ्यक्रमों का विस्तार भी होता जा रहा है जिससे धोखाधड़ी, पेपर लीक, फर्जीवाडा जैसी घटनाएं सामने आ रही है, इस प्रकार की घटनाएं इनकी विश्वनीयता को कम करती है।

5. ग्रामीण तथा दुर्गम क्षेत्र:-

भारत की जनसंख्या का एक बड़ा वर्ग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है, इसके साथ कुछ ऐसे लोग भी है जो दुर्गभ, पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करते है। यहाँ के छात्रों को अधिकतर नेटवर्क संबंधित परेशानियों का सामना करना ही पड़ता है। इन छात्रों की समस्याओं का एक निश्चित अथवा उचित समाधान निकाल पाना बहुत ही मुश्किल है। ऐसे क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाएँ अपना प्रकोप दिखाती ही रहती है।

6. सीमित संपर्क:-

मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में छात्र अपने अध्ययन के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र होता है। शिक्षक, अध्ययन करने वाले छात्र, उनके साथ अध्ययन करने वाले सहपाठी एक दूसरे के सामने स्थित नहीं होते है। ऐसी स्थिति में उन्हें अन्य छात्रों के बारे में इतना ज्ञान नहीं हो पाता कि किसी भी अच्छी स्थिति अथवा परेशानियों को एक-दूसरे से साझा किया जा सके।

12. भारत के प्रमुख शिक्षण संस्थान:-

देश में ऐसे कई संस्थान है जहाँ मुफ्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ज्ञान का प्रचार प्रसार किया जाता है। भारत के प्रमुख तथा प्रख्यात विश्वविद्यालयों का उल्लेख यहा किया जा रहा है जो कि निम्नलिखित है:-

	नाम	**स्थान**
1.	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	नई दिल्ली

2.	यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय	नासिक, महाराष्ट्र
3.	आईएमटी दूरस्थ तथा मुक्त शिक्षण संस्थान	गाजियाबाद
4.	सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय	गंगटोक, सिक्किम
5.	मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय	भोपाल, मध्यप्रदेश
6.	डा.बी.आर.आम्बेड़कर मुक्त विश्वविद्यालय	हैदराबाद, तेलंगाना
7.	नेताजी सुभाषचंद्र मुक्त विश्वविद्यालय	कलकत्ता,पश्चिम बंगाल
8.	मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय	हैदराबाद, तेलगांना
9.	डा. बाबा साहेब आम्बेड़कर मुक्त विश्वविद्यालय	अहमदाबाद, गुजरात
10.	नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय	पटना, बिहार
11.	कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय	कुरूक्षेत्र
12.	पण्डित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय	कोनी, छत्तीसगढ़
13.	कोटा मुक्त विश्वविद्यालय	कोटा, राजस्थान

13. उपसंहार:-

उपरोक्त तथ्यों तथा कथनों के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि ऐसा कोई भी छात्र जो ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा रखते है, शिक्षा अथवा उच्च अध्ययन में रूचि रखते है तथा कार्य के साथ ही ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखते है, मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ऐसे छात्रों के लिए एक वरदान है जिसमें छात्र अपने स्थान अथवा क्षेत्र में रहकर ही शिक्षा पूर्ण कर लाभ ले सकते है। इसके लिए उन्हे अपने जीवनयापन करने के लिए किए जा रहे कार्यो को छोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

14. छात्रों के लिए महत्वपूर्ण सुझाव:-

कोई भी छात्र जो मुक्त तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से अध्ययन कर रहे है अथवा प्रवेश की इच्छा रखते है वे सभी जिस भी विश्वविद्यालयों, शिक्षण सस्थानों अथवा शिक्षण केन्द्रो मे प्रवेश पाना चाहते है -

- ❖ स्वयं जाकर उसकी उचित जाँच पड़ताल करें,
- ❖ उस संस्थान की लाभ, हानियाँ, कैम्पस तथा अन्य सभी महत्वूपर्ण जानकारियों को प्राप्त कर अवलोकन करे,
- ❖ किसी संस्थान की जानकारी आधिकारिक वेबसाइट से ही ही प्राप्त करे,

- किसी भी संस्थान में सभी पहलुओं को परखकर ही वहा प्रवेश ले।

भविष्य की चिंता हर छात्र को होती है। किसी भी संस्थान में प्रवेश से पहले उचित जाँच अवश्य करे ताकि भविष्य में होने वाली परेशानियों से बचा जा सके क्योंकि इससे डिग्री के साथ समय की बर्बादी हो जाती है जिसकी उचित भरपाई करना संभव नही है।

Reference:-

1. दैनिक भास्कर, दिनांक - 20/सितम्बर/2020, रसरंग, दैनिक भास्कर, पेज नं-12, जोधपुर, भास्कर 360^0, 'किसान फिर केन्द्र में,
2. दैनिक भास्कर, दिनांक - 26/जनवरी /2021, डी.बी स्टार भोपाल, एजुकेशन एंड केरियर, पेज नं.4, India Innovation Index,
3. **https://**www.ugc.ac.in**.**
4. **https://**www.eguardian.co.in 'दूरस्थ शिक्षा और इसके लाभ। भारत में डिस्टेंस एजुकेशन कहाँ और कैसे प्राप्त करे' द्वारा इगार्डियन इंडिया/दूरस्थ शिक्षा,
5. **https://hindistudio.com** 'दूरस्थ शिक्षा के फायदे और नुकसान' द्वारा मुकेश राजपूत,
6. **https://hi.m.wikipedia.**org दूरस्थ शिक्षा विकीपीडिया,
7. **https://**www.ikamai.in 'दूरस्थ शिक्षा क्या है ? इसके फायदे व नुकसान' द्वारा महेन्द्र रावत।